

शार्क और छोटी मछलियाँ

• बर्टोल्ड ब्रेष्ट

“यदि शार्क मनुष्य हो जाएँ तो क्या वे छोटी मछलियों से भला व्यवहार करेंगे?” श्रीयुत के. की मकानमालकिन की छोटी पुत्री ने उनसे पूछा। ‘अवश्य’, उसने उत्तर दिया, यदि शार्क मनुष्य हो जाएँ तो वे छोटी मछलियों के लिए मजबूत बक्से बनवा देंगे। उन बक्सों में वे सब प्रकार के भोजन तथा पौधे और नन्हें जानवर रख देंगे। वे इस बात का बराबर ध्यान रखेंगे कि बक्सों को ताज़ा पानी मिलता रहे तथा मछलियों की स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रबन्ध बने रहें। उदाहरण के लिए, यदि कोई छोटी मछली अपना पंख घायल कर ले तो उसकी तुरन्त मरहम पट्टी की जाएगी ताकि वह समय से पूर्व मरकर शार्कों के लिए असुविधा का कारण न बनें। छोटी मछलियाँ कभी उदास न हों, इसलिए समय-समय पर विशाल जलसे और भोज होंगे क्योंकि प्रसन्न मछलियाँ उदास मछलियों की तुलना में अधिक स्वादिष्ट होती हैं।

उन विशाल बक्सों में मद्दरसे भी अवश्य ही होंगे। वहाँ छोटी मछलियाँ तैरते हुए शार्कों के मुँह में प्रवेश कर जाने की शिक्षा लेंगी। उदाहरण के लिए, उन्हें शिक्षा में भूगोल की आवश्यकता भी पड़ेगी ताकि वे आस-पास विश्राम करती हुई शार्कों को जब ज़रूरी हो खोज सकें। स्वाभावित रूप से शिक्षा का मुख्य विषय छोटी मछलियों को नैतिक पाठ होगा। उन्हें सिखाया जाएगा कि सबसे शानदार और सबसे सुन्दर बात यह है कि छोटी मछली बाखुशी अर्पित कर दे, तथा यह कि उन्हें सदैव शार्कों पर विश्वास करना चाहिए—सबसे अधिक उस वक्त जब शार्क यह कहें कि वे उनके लिए सुनहले भविष्य का निर्माण करेंगे। छोटी मछलियों को जब यह बताया जाएगा कि यह सुनहला भविष्य तभी

सुनिश्चित होगा जब वे अनुशासन और आज्ञाकारिता सीखें। उन्हें सभी तामसिक, भौतिक और मार्क्सवादी प्रवृत्तियों से बचना होगा और उनमें से कोई भी इन प्रवृत्तियों की तरफ जाने का संकेत देती हों तो तुरन्त उन्हें शार्कों को सूचित करना होगा।.....

यदि शार्क मनुष्य हो जाएँ तो फिर समुद्र तल में कला भी ज़रूर मौजूद होगी। दमदमाते रंगों में शार्कों के दाँतों के खूबसूरत चित्र होंगे, उनके मुँह और कण्ठ के चित्र खेल मैदानों जैसे होंगे, जहाँ लुढ़का जा सके, खेला जा सके। समुद्र तल पर नाट्य ग्रहों में नाटक दिखाए जाएँगे जिनमें बहादुर छोटी मछलियों को सोत्साह शार्कों के गलों में तैर कर उतरते हुए दिखाया जाएगा तथा संगीत इतना मादक-मधुर होगा कि उनके स्वर छोटी मछलियों को गिरिजा घरों के स्वप्न में ले जाएँगे और अत्यन्त उल्लासपूर्ण विचारों से भरी हुई वे शार्कों के उतर जाएँगी।

धर्म भी अवश्य होगा...। वह उन्हें सिखाएगा कि सच्चा जीवन शार्कों के उदर से ही आरम्भ होता है और यदि शार्क मनुष्य हो जाएँ तो छोटी मछलियाँ आज की तरह समान नहीं रहेंगी, उनमें से कुछ को पद देकर दूसरों से ऊपर कर दिया जाएगा। कुछ बड़ी मछलियों को छोटी मछलियों को खाने तक की इजाज़त दे दी जाएगी। यह शार्कों के लिए आनन्ददायक होगा क्योंकि फिर उन्हें निगलने के लिए बड़े ग्रास मिलेंगे और छोटी मछलियों में से सबसे महत्वपूर्ण जिनके पास पद होंगे, वे छोटी मछलियों को व्यवस्थित करेंगी। वे शिक्षक, अधिकारी, बक्से बनाने वाली इंजीनियर आदि बनेंगी। संक्षेप में, समुद्र में संस्कृति तभी होगी जब शार्क मनुष्य के रूप में हों।

राहुल फाउण्डेशन की ओर से नौजवानों के लिए कुछ बेहद ज़रूरी किताबें

● छात्र नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें	(10 रुपये)
● ईश्वर का बहिष्कार	राधामोहन गोकुलजी (15 रुपये)
● लौकिक मार्ग	राधामोहन गोकुलजी (15 रुपये)
● धर्म का ढकोसला	राधामोहन गोकुलजी (15 रुपये)
● स्त्रियों की स्वाधीनता	राधामोहन गोकुलजी (15 रुपये)
● क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास	शिव वर्मा (10 रुपये)
● संस्मृतियाँ	शिव वर्मा (50 रुपये)
● भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति	बिपन चन्द्र (10 रुपये)
● भगतसिंह और उनके साथी	अजय घोष, गोपाल ठाकुर (30 रुपये)
● An Appeal to the Young	Peter Kropotkin (Rs. 10)